प्रातः लीला

राधारानी का आपने श्रृंगार किया, उनको शीशा दिखाया, मणिमय शीशा। किसने? वरुण तो प्रवेश नहीं कर सकता न वहाँ, मंजरी स्वरूप में। हमने उनको शीशा दिखाया। आहा! राधारानी शीशे में स्वयं को देखकर अति मोहित हो गई, यह देखकर नहीं कि मैं कितनी सुन्दर... हम शीशे में देखते हैं तो किसलिए देखते हैं? मैं कितना सुन्दर लग रहा हूँ, लग रही हूँ। यह गन्दी सोच ब्रज में किसी की भी नहीं है। उन्होंने सोचा कि यह रूप से कृष्ण कितने सुन्दर होंगे इस रूप को देखकर, मैं कैसे कृष्ण को सेवा कर सकूँ यह रूप दर्शन करवाकर। ये सोच है उनकी।

आपने परिधेय वस्त्र पहना दिया न, तो आपने सोचना..., अगला step क्या है? अगला step आपको बता रहे हैं क्या है। वह करवाया, आप राधारानी के साथ हो, वे तो तड़प रही हैं, अब तो कपड़े भी..., सब अच्छी तरह डाल लिए, अब क्या, अब तो चलो चलें, कुंदलता का इंतज़ार हो रहा है। अब short में करके बताएँगे। किसी तरीके से निकल गए घर से, अब यह बताएँगे तो यह पूरा अलग ही विस्तृत जटिला के साथ क्या कथा है, वह सब अलग है। फिर हम बाहर राधारानी के साथ निकल रहे हैं, हम पीछे में हमारे, राधारानी के पीछे अनंग मंजरी, बायें-दायें ललिता-विशाखा सखी और रूप-रति मंजरी पीछे और हम लड्डु इत्यादि लेकर ठाकुर के breakfast के लिए सुबह हम चल रहे हैं।

अब हम चले, संकीर्ण गलियों से, secluded..., जिसमें निर्जन स्थान, लोग नहीं होते। अब राधारानी तो तड़प रही हैं; और उनके वस्त्रों से, अंगों से कान्ति निकल, जो कान्ति जो वस्त्र इत्यादि आभूषणों से निकल रही है वह मरकत, वह मणिमय बना रही है सारे रास्ते को, हमारी तरह रास्ते में जाना नहीं है राधारानी का। जब राधारानी चल रही हैं तो वे राधारानी हैं। वे चल रही हैं तो उनके अंग कान्ति मणिमय, पूरे स्थान को मणिमय बना रही है। अंग कान्ति नहीं, जो उनके वस्त्रों आभूषणों की कान्ति है, और उनकी जो अंग कान्ति है, ऐसे लग रहा है सारी roads gold की बन गई हैं। स्वर्णमय बन गए सारे रास्ते, पेड़, दीवारें, सब। इतनी कान्ति निकल रही होती है।

अब हम चलते-चलते जा रहे हैं और सहेलियाँ यानि कि हम सब और उनकी सहेलियाँ, तो हास-परिहास, वह मैं बता नहीं सकता अभी, क्योंकि... थोड़ा सा बता दूँगा, क्योंकि बहुत विविध प्रकार का हास-परिहास होता है, बहुत ज़्यादा विविध प्रकार का। अब चल रही हैं सखियाँ और राधारानी के साथ हास-परिहास और राधारानी कुछ सुनती ही नहीं, उनको पता ही नहीं चल रहा मैं कहाँ से आई हूँ और कहाँ जा रही हूँ, वे भूल ही जाती हैं, उनको होश ही नहीं रह रहा, वे क्या कर रही हैं, कहाँ पर जा रही

हैं, आ रही हैं।

और जैसे ही नन्दीश्वर, जो भगवान् का स्थान है जहाँ कृष्ण रहते हैं, नन्दबाबा का स्थान, नन्दभवन, उनके पास में पहुँचने वाले होते हैं तो यह सोचकर- 'भगवान् कृष्ण के मिलन के आनन्द स्मृति के विचार मात्र से', समझ रहे हो? 'कृष्ण मिलन के स्मृति के विचार मात्र से राधारानी का चलना दुर्भर हो जाता है।' वे चल नहीं पाती हैं।

इतना आनन्द जड़ता हो जाती है, आनन्द का... जब यहाँ का भक्त चिन्तन करता है ठाकुर का, उसको अश्रुकम्प, अष्ट सात्विक विकार आ जाते हैं, किसलिए? क्योंकि प्रेम की एक बूंद की झलक है उसमें। और ठकुरानी क्या हैं? प्रेम का महासागर। तो ठाकुर का स्मरण किया, ठाकुर आनन्दमय हो गए, पूरा जड़-कम्प तो होना ही है और वे चल नहीं पा रहीं, वे सखियों से कहती हैं, "अरि सुन! अब मैं इतनी तेज़ नहीं चल सकती। धीरे चलो, मेरे पांव में कंकड़ लग रहे हैं।" और दूसरी सहेली बोलती हैं, "तेरे पांव में कंकड़ लग रहे हैं कि मन में? सच बोल...?" तो ठकुरानी चुप, दूसरी कहती हैं, "इसके मन में काला कंकड़ लग रहा है।" इस प्रकार से बातचीत करते हुए आगे चलते हैं।

फिर तुंगविद्या सखी, वे कहती हैं कि, "देख राधे, तू इतनी दूर जावट से, इतनी दूर जावट से आई है, अब इतना नज़दीक नंदभवन आ गया है। तेरी चातक रूपी आँखों को नवजलधर रूपी तेरा रस प्राप्त होगा।" चातक, चातक को cloud, बादल का पान, चातक बादल का ही पान करता है। "तो तेरे चातक रूपी नेत्रों को नवजलधर..." Kṛṣṇa is like a dark blue cloud, rain cloud. "तो उसका पान तेरे को बहुत शीघ्र होगा।" और ये बात जैसे ही सुनती हैं, तो राधारानी को क्या होता है? अकस्मात् जड़-कम्प, एकदम जड़। जड़ समझते हो? जड़ता? What do you call जड़? You become stationary, you become immovable, you are not further movable, like a tree you become जड़। हिल नहीं सकते, राधारानी की ये स्थिति है। जिनके इशारे के बिना कृष्ण नहीं हिल सकते, वे तड़प, जड़ के मारे कम्पन इस प्रकार हो जाती है, inert, inert समझते हो न? जड़।

फिर किसी तरह तुंगविद्या सखी सहलाती हैं, संभालती हैं, "अरि मेरी प्रिय राधे! उठ, उठ। अभी तो तूने कृष्ण के दर्शन भी नहीं किए, कृष्ण के स्मरण मात्र से तुम्हारी यह हालत है, इससे तुम्हारे सतित्व का साफ़ पता चलता है तुम कितनी बड़ी सती हो।" ये प्रकार का मज़ाक होता है राधारानी से, कितनी बड़ी सती हो। फिर कुंदलता...

हम थोड़ा जल्दी चलेंगे, आपने श्रृंगार किया था न? अब आगे भी तो करो ये चीज़ें न। फिर आप आगे, फिर कुंदलता मज़ाक करती हैं गिरिधारी नाम से, वह हम अभी नहीं बताएँगे।

और फिर आगे ललिता को कहती हैं, "देखो, अब यह बहुत मज़ाक हो गया, अब तुम सामने देखो town gate, पुर द्वार, town gate ! पुर द्वार पर वह देखो कृष्ण जो हैं दूध दोहन करके, अपने सखाओं के साथ मल्लयुद्ध करके, वह देखो स्फटिक मणि से निर्मित एक चबूतरे पर आराम से बैठे हैं, वह देखो।" यह बात कर रही हैं कुन्दलता ललिता को इशारा करके। "ये बहुत बातें कर ली, मज़ाक हो गया, वह देखो जिसके लिए आए थे, वे इंतज़ार कर रहे हैं कि तुम्हारी सखी आएँगी", किसको बोल रही हैं, कौन बोल रही हैं? कुन्दलता ललिता को बोल रही हैं, "कृष्ण को पता है तुम्हारी सखी इस रास्ते आएँगी तो दूध दुह कर और मल्लयुद्ध करके अब वे इंतज़ार कर रहे हैं स्फटिक मणि पर।", ये सब बातें हो रही हैं।

फिर राधारानी से बात करते हैं, "हे राधे ! वह देखो कृष्ण, उनकी जो अंग कान्ति है, ऐसे मानो जैसे उनका आलिंगन कर रही हो। कृष्ण की अंग कान्ति कृष्ण का ही अलिंगन कर रही हो, देखो ऐसा लग रहा है, उनके माधुर्य इतना ज़्यादा है कि उस माधुर्य के भार से वे त्रिभंग रूप हो गए हैं, तीन जगह से टेढ़े हो गए हैं। अपने माधुर्य के भार को न संभालने के कारण, वे त्रिभंग हो गए हैं। और देखो जो उनकी धोती है, उनकी पीली धोती, उससे कान्ति निकल रही है, पीली कान्ति। उनकी देह से कौन सी कान्ति निकल रही है? नील कान्ति। नील व पीली कान्ति मिलकर जैसे गंगा और यमुना का बहाव... गंगा यमुना सोचो इकट्ठे बहें जैसे प्रयाग में हैं, तो किस वेग से बहती हैं, तो उसमें जितने भी दर्शनार्थी इत्यादि होते हैं, उसमें डूबकर अपनी अभिलषित वस्तु को प्राप्त करते हैं, जो वे चाहते हैं वह प्राप्त कर लेते हैं, गंगा यमुना के उस मिलन के अन्दर डूबकर। उसी प्रकार से जो कृष्ण के अंगों की कान्ति और धोती की जो कान्ति है, वो दसों दिशाओं को स्निग्ध कर रही है और उसमें डूबकर सखी, जो सखियाँ हैं वे अपनी अभिलषित वस्तु, यानि कृष्ण को प्राप्त कर रही हैं। एकदम आनन्दमय हो रही हैं", इस प्रकार से। और फिर कहती हैं, "देखो, वे सुबल के कन्धे पर बायां हाथ रखकर, बायां हाथ रखे हैं और दाहिने हाथ से नील, यही नील, नीलकमल को घुमा रहे हैं, नीलकमल को नहीं जैसे गोपियों के मन को अपने हाथ में लेकर घुमा रहे हैं।"

अब तो राधारानी ने यह सुना, एक तो यहाँ से पी रही हैं और यहाँ से भी पी रही हैं,

नयन चषकों से और कर्ण चषकों से; नयन के प्यालों से और कर्ण के प्यालों से कृष्ण को पी रही हैं साक्षात्। तो राधारानी में तुरन्त अश्रु-पुलक, सब कुछ, tremble करना, सब कुछ शुरु हो गई राधारानी।

अभी कृष्ण दर्शन हुआ..., दूर से हो रहा है। एकदम, अष्ट सात्विक विकार आने शुरु हो रहे हैं। फिर अचानक श्रीकृष्ण के अंग की जो गन्ध आती है, वह राधारानी की नासिका में प्रवेश करती है। तो राधारानी थोड़ी सी चेतन होती हैं।

"हे ललिते! क्या और कोई स्थान नही है आगे जाने का?"

आई किसलिए हैं? यशोदा माता ने तो बुलाया था, व्यंजन बनाने के लिए ठाकुर के लिए।

"कोई और स्थान नहीं है क्या, जहाँ से हम जा सकें?"

तो ललिता कहती हैं, "तुम चिन्ता मत करो, जब हम गुरुजनों की बात मानते हैं तो सब मंगल ही होता है, चलो इसी स्थान से ही चलो।"

जब राधारानी बोलती हैं कि और कोई स्थान नहीं है जाने का क्या? बोलते हैं कि गुरुजन जो कहते हैं उसी से सब...

तो जब एकदम पास में आकर राधाकृष्ण एक-दूसरे के दर्शन करते हैं तो वह जो scenario... वह जो चित्र... वह जो दृश्य है, वह दृश्य सरस्वती भी अपनी ज़बान में व्याख्यान नहीं कर रही, क्यों? उस समय राधाकृष्ण का सौंदर्य इतना ज़्यादा, इतना ज़्यादा हो जाता है कि राधाकृष्ण दोनों के देह से अतुलनीय वेगवती महाकल्लोल तरंगणी मालाएँ बहनी शुरु हो जाती हैं, अतुल वेग से..., एकदम तेज़-तेज़ वेग से तरंग मालाएँ, महाकल्लोलनी, एकदम... मालाएँ दोनों के देह से बहनी शुरु हो जाती हैं। बोलते हैं न अतुल वेग, मतलब in stop... very fast-furious, वैसे ही तरंग कान्ति मालाएँ तो वैसे ही बह रही होती हैं, परन्तु वह वेग बहुत तेज़ हो जाता है उस समय।

यह हमारे श्रृंगार का फल है कि एक-दूसरे के दर्शन, एक-दूसरे ने कर लिए।

आप श्रृंगार करते हैं उसके बाद परिधेय वस्त्रं, उसका फल क्या है? यह फल है कि जब उनके दर्शन करके अतुलनीय वेग से उनकी कान्ति मालाएँ निकलती हैं।

अभी यह कितना अच्छा लगता है श्रवण करना, हाँ जब हम अपने आपको मनुष्य नहीं मान रहे। किसी को दौरा चढ़ रहा है मनुष्यपने का अभी? नहीं चढ़ रहा न, कितने

खुश हो न? ऐसे ही रहा करो। कमरे के बाहर निकलते ही फिर मनुष्य का role मत शुरु कर दो।

ठीक है आप ठाकुर की सेवा जैसे वे चाहते हैं वैसे ही कर पाओ इसी आशा से, इसी प्रार्थना के साथ आज का सत्र हम यहीं विराम करते हैं।

राधारानी की जय!

निताई गौर प्रेमानन्दे!